RESEARCH HUB – International Multidisciplinary Research Journal (RHIMRJ)
Research Paper

हिन्दू–इस्लामी संस्कृति का परस्पर प्रभाव

आरती कुमारी यादव

इतिहास विभाग, वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा (बिहार)

इस्लाम धर्म के प्रवर्तक हजरत मोहम्मद साहब थे। इनका जन्म मक्का में 570 ई. में हुआ था। बाल्यकाल में ही इनके माता–पिता का देहान्त हो गया था। इसलिए इनका पालन–पोषण इनके चाचा अबू तालिक ने किया था। पवित्र ज्ञान प्राप्ति के बाद जब इन्होंने इस्लाम के सिद्धान्तों को प्रतिस्थापित करने का यत्न किया, तब इन्हीं के कबीले के लोगों ने प्रारंभ में इनका विरोध किया जिसके उग्र स्वरूप को देखकर 622 ई. में पैगम्बर साहब ने मक्का से मदीना के लिए प्रस्थान किया। यहीं पर इन्होंने पवित्र कुरान की रचना की, जो इस्लाम धर्म का आधार है। इस्लाम का मूल मंत्र है 'या इलाह इल्लिलाह मुहम्मदुर्रसूलिल्लाह' अर्थात् 'अल्लाह के सिवा और कुछ कोई वन्दनीय नहीं है तथा मोहम्मद उसके रसूल हैं।'

कुरान में इस्लाम के अनुयायियों के निम्न पाँच कृत्यों का संपादन निश्चित बताया गया है : (1) कलमा पाठ करना, (2) नमाज पढ़ना, (3) रोजा रखना, (4) जकात देना, तथा (5) हज करना।

इसके अतिरिक्त मुस्लिम संप्रदाय एकेश्वरवादी है। इस्लाम का पुनर्जन्म में विश्वास नहीं है, अपितु उनकी मान्यता है कि कब्र में मनुष्य का दूसरा जीवन प्रारंभ होता है जिसे 'वरजाख' कहा जाता है और जब कयामत का दिन आता है तब उसे स्वर्ग या नरक प्राप्त होता है। इस्लाम के प्रचार व प्रसार के कार्य को तलवार के बल पर किया गया, इसलिए अन्य जातियों के हृदय पर विजय प्राप्त नहीं कर सका। साथ ही शक्ति को धर्म के क्षेत्र में महत्व न देने वाले लोगों ने प्रतिक्रियास्वरूप सूफी संप्रदाय को जन्म दिया। अरब प्रथम आक्रमणकारी के रूप में भारत आये। तत्पश्चात् तुर्कों और मुगलों ने भारत में प्रवेश किया और एक लंबे समय तक शासन करते रहे जिसके परिणामस्वरूप दो परस्पर विरोधी संस्कृतियों को साथ–साथ निवास करने का अवसर प्राप्त हुआ।

हिन्दू–मुस्लिम संस्कृतियों के समन्वय ने एक नवीन समस्या को जन्म दिया। इतिहास में दो परस्पर विरोधी विचारधाराओं का जन्म हुआ। इस संस्कृति का प्रभाव दूसरी पर अधिक व स्थायी रहा। इस संदर्भ में डॉ. ताराचन्द ने लिखा है : ''हिन्दू धर्म, हिन्दू कला, हिन्दू साहित्य और हिन्दू विज्ञान ने मुस्लिम तत्वों को ग्रहण ही नहीं किया अपितु हिन्दू संस्कृति की भावना व मस्तिष्क की सामग्री भी परिवर्तित हो गयी।'' परन्तु ई. बी. हैवेल तथा प्रो. शर्मा का मत है कि ''अपनी राजनीतिक दुर्बलता के बाद भी मध्ययुगीन भारत सांस्कृतिक दृष्टि से चैतन्य था। वह उस वृक्ष के समान था जो उस व्यक्ति को भी छाया देता है जो उसकी शाखाएँ काट डालता है। राजनीतिक पराजय के बाद भी भारत ने अपना बौद्धिक साम्राज्य जो उसे सर्वाधिक प्रिय था, बनाये रखा।'' वस्तुतः भारत ने जो कुछ रणक्षेत्र में खो दिया था उसे आध्यात्मिक क्षेत्र में पुनः प्राप्त कर लिया था। वास्तव में उपर्युक्त दोनों तर्क अतिवादी हैं। कोई भी एक संस्कृति न तो दूसरी को पूर्ण रूप से अपने में आत्मसात् कर सकी और न ही अछूती रही। इस्लाम ने भारतीय संस्कृति पर जो प्रभाव डाले उनको सर यदुनाथ सरकार ने निम्नलिखित भागों में विभाजित किया है– (1) व्यापार पर प्रभाव, (2) शासन पर प्रभाव, (3) कलाओं पर प्रभाव, (4) साहित्य एवं भाषा पर प्रभाव, (5) समाज एवं धर्म पर प्रभाव, (6) युद्ध–कला पर प्रभाव।

(1) व्यापार पर प्रभाव– इस्लाम के भारत में आगमन के बाद इसका बाह्य संसार से पुनः संपर्क स्थापित हुआ जो चोल–शासकों के पतन के बाद समाप्त हो गया था। डॉ. चोपड़ा ने लिखा है, ''17वीं शताब्दी के प्रारंभ में व्यापारी प्रति वर्ष कम से कम 14,000 ऊँटों पर पर माल लादकर भारत से कन्धार ले जाते थे। भड़ौंच, सूरत, चौल, गोआ आदि बन्दरगाहों से अरब, फारस, टर्की, मिस्त्र, असीसीनिया आदि देशों को भारतीय वस्तुएँ निर्यात की जाती थीं, मुगल शासकों ने यूरोप के देशों के साथ व्यापार को प्रोत्साहित किया और वहाँ के व्यापारियों को भारत के तट पर अपनी फैक्ट्रियाँ स्थापित करने के आदेश दिये जिससे भारत का विदेशों से पुनः सम्पर्क स्थापित हुआ।''

(2) शासन पर प्रभाव– मुसलमानों के भारत में प्रवेश से पूर्व भारत राजनीतिक रूप से छोटे–छोटे टुकड़ों में विभाजित था। छोटे–छोटे राजपूत राजा निरंतर गृह–कलह में लीन रहकर अपनी शक्ति का उत्तरोत्तर ह्रास कर रहे थे। इस्लाम के आगमन के बाद ये सब एक सूत्र में बँध गये। सर जदुनाथ सरकार ने लिखा है : ''अकबर के सिंहासनारूढ़ होने के समय से मुहम्मद शाह के समय तक (1556–1749 ई.) दो सौ वर्ष के मुगल शासन ने संपूर्ण उत्तरी भारत और अधिकांश दक्षिण को भी राजकीय भाषा, प्रशासन विधि और मुद्रा की एकता प्रदान की।''

2016, RHIMRJ, All Rights Reserved ISSN: 2349-7637 (Online)

(3) धर्म पर प्रभाव– डॉ. ताराचन्द की मान्यता है कि इस्लाम के प्रभाव के कारण हिन्दू धर्म में आश्चर्यजनक परिवर्तन हुए। मनुष्य मात्र की समानता, मूर्ति–पूजा का खंडन और एकेश्वरवाद इस्लाम के मुख्य सिद्धांत थे, जिससे भक्ति आन्दोलन के प्रवर्तक संत अत्यधिक प्रभावित थे। परंतु डॉ. चोपड़ा का मत है कि ''ऐतिहासिक दृष्टि से यह कहना असंगत होगा कि मध्ययुग के हिंदुओं में 'एकेश्वरवाद' और जाति–विरोधी आन्दोलन का जन्म इस्लाम के कारण हुआ।'' वस्तुतः शंकराचार्य का एकेश्वरवाद अद्वैतवाद का विकसित रूप था और इस्लाम के एकेश्वरवाद से पूर्णतया भिन्न था। डॉ. ताराचन्द का यह कथन कि गुरू–भक्ति एवं गुरू–पूजा इस्लाम की शाखा सूफीवाद की नकल हैं, युक्तिसंगत नहीं है क्योंकि इतिहास साक्षी है कि प्राचीन काल से हिन्दू गुरू–पूजक थे।

(4) समाज पर प्रभाव– हिन्दू समाज पर इस्लाम के प्रभाव को स्पष्ट करते हुए डॉ. ताराचंद ने लिखा है : ''भारतीय संस्कृति के विकास पर मुस्लिम विजय–अभियानों का अत्यधिक प्रभाव पड़ा। इसने सभी व्यवस्थाओं को अस्त–व्यस्त कर दिया। हिन्दू धर्म को धक्का लगा और धार्मिक वर्ग का महत्व समाप्त हो गया।'' इस्लाम के आगमन के कारण भारतीय सामाजिक व्यवस्था में अनेकानेक कुरीतियों का समावेश हुआ। हिन्दू धर्म में पवित्रता को बनाये रखने के लिए ब्राह्मणों ने हिन्दू धर्म को अत्यंत जटिल बना दिया था। बाल–विवाह एवं जौहर प्रथा का प्रचलन इस्लाम के प्रभाव के कारण हुआ। कामुक तातारों की काम–पिपासा से सुरक्षा के लिए पर्दा–प्रथा को महत्व प्राप्त हुआ। वेशभूषा एवं रीति–रिवाज भी इस्लाम के सम्पर्क में अछूते नहीं रहे। डॉ. चोपड़ा ने लिखा है : ''इस्लाम का सांस्कृतिक प्रभाव पोशाक और भोजन में, मेलों एवं त्योहारों को मनाने में, विवाह एवं रीति–रिवाजों तथा दरबारी शिष्टाचारों में भी दिखायी देता है। मुस्लिम समाज में प्रचलित 'अकीका' और बिसमिल्लाह' हिन्दुओं के 'मुण्डन' और 'विद्यारम्भ' संस्कारों के ही प्रतिरूप हैं। हफ्त–ओ–नूह नववधू के सोहल शृंगारों का दूसरा रूप है। मुसलमान व हिन्दू समान रूप से पाजामा, अचकन, पाग व चीर पहनने लगे थे। यद्यपि इस्लाम में आभूषण पहनना वर्जित था, परंतु हिन्दुओं के सम्पर्क के कारण धनी मुसलमान आभूषणप्रिय हो गये थे।

(5) कला पर प्रभाव– हिन्दू एवं इस्लाम के निरंतर संपर्क के कारण कला के क्षेत्र में नये मार्ग उन्मुख हुए और दोनों कलाओं ने एक–दूसरे पर व्यापक प्रभाव डाले। डॉ. ताराचन्द ने तत्कालीन निर्मित भवनों की निर्माण–शैली का सूक्ष्म अध्ययन करने के पश्चात लिखा है कि ''वस्तुतः तत्कालीन हिन्दू या मुस्लिम स्थापत्य–कला एक पेड़ की दो शाखाएँ हैं जिनका उदय एक ही जड़ से हुआ था। उनके उद्देश्य भिन्न हो सकते हैं परन्तु उनका महत्व एक ही था।'' मुस्लिम स्थापत्य–कला के प्रभाव को स्पष्ट करते हुए पर्सी ब्राउन ने लिखा है : ''वृन्दावन के मंदिरों में बहुत कुछ अपना मौलिक है, पर कुछ अन्य हिन्दू इमारतों में गोविन्ददेव के मंदिर की अपेक्षा मुसलमानों की प्रचलित शैली का प्रभाव अधिक स्पष्ट है।''

स्थापत्य कला पर प्रभाव– गुलाम युग की इमारतों पर भारतीय कला का प्रभाव स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है। खजली–युग में भारतीय शैली के विरूद्ध प्रतिक्रिया होने के कारण अरबी कला को महत्व प्राप्त हुआ। तुगलककालीन इमारतें पूर्ण रूप से इस्लाम शैली की हैं परन्तु लोदी–काल आते–आते पुनः भारतीय शैली को महत्व प्राप्त हुआ। हैवेल के अनुसार, मध्य–युग की कला पर हिन्दू प्रभाव का बाहुल्य है परन्तु स्मिथ व फर्ग्युसन का मत इसके विपरीत है। सर जॉन मार्शल का मत है कि ''भारतीय मध्ययुगीन कला हिन्दू व मुस्लिम दोनों संस्कृतियों से प्रभावित हुई।''

चित्रकला पर प्रभाव– चित्रकला पर दोनों संस्कृतियों के प्रभाव को स्पष्ट करते हुए सर जदुनाथ सरकार ने लिखा है : ''यद्यपि मुगलकाल में चित्रकला का आधार फारसी शैली था, परंतु वास्तव में यह हिन्दू और फारसी विचारों का सम्मिश्रण था। इसका विकास मुगल व राजपूत शैलियों के समन्वय के कारण हुआ।'' प्रारंभिक मुगल चित्रकला शैली की कठोरता का स्थान कालान्तर में भारतीय शैली की कोमलता ने ले लिया था और उदार अकबर ने दोनों शैलियों के समन्वय को राष्ट्रीय शैली का रूप प्रदान किया।

(6) संगीत पर प्रभाव– संगीत में फारसी एवं हिन्दू रोगों के समन्वय के परिणामस्वरूप नवीन राग–रागनियों का जन्म हुआ। 'ख्याल' संगीत इस युग की विशेष देन है। भारतीय वीणा और ईरानी तम्बूरे को मिलाकर 'सितार' का आविष्कार किया गया। कव्वाली और गजल भी इस्लाम की ही देन हैं।

(7) साहित्य एवं भाषा पर प्रभाव– हिन्दू–मुस्लिम समन्वय के युग में विभिन्न प्रकार के साहित्य का जन्म हुआ। राज्याश्रम के अभाव में संस्कृत मृतप्राय हो चुकी थी। मुसलमान सुल्तानों ने अरबी व फारसी को राजभाषा घोषित कर दिया था। प्रान्तीय राजाओं ने संस्कृत को आश्रय प्रदान किया और मुस्लिम शासकों ने भी कुछ संस्कृत ग्रंथों को फारसी में अनुवाद कराया।

साहित्य के क्षेत्र में उर्दू के विकास पर इस्लामी संस्कृति का प्रभाव स्पष्ट है। उर्दू की उत्पत्ति एवं विकास के सम्बन्ध में इतिहासकार एकमत नहीं हैं। मुसलमानों के भारत और विशेष रूप से दिल्ली आने के बाद फारसी शब्दों का खड़ीबोली, पंजाबी व ब्रजभाषा से मिश्रण होने के कारण उर्दू का उदय हुआ। उर्दू का उदय हिन्दू और मुसलमानों के सांस्कृतिक समन्वय का परिणाम कहा जा सकता है। सूफी संतों ने अपने धर्म–प्रचार के लिए उर्दू को ही माध्यम बनाया था।

ऐतिहासिक साहित्य की रचना मुस्लिम संस्कृति की महत्वपूर्ण देन है। मुसलमानों के आगमन से पूर्व भारतीय समाज में इतिहास–लेखन की ओर विशेष ध्यान नहीं दिया जाता था। पूर्व मध्यकाल में 'तबकाते नासिरी', 'ताजुल मासिर', 'तारीखे

फिरोजशाही' आदि कुछ महत्वपूर्ण ग्रंथ लिखे गये। अमीर खुसरो आदि विद्वानों ने भी कुछ ऐतिहासिक ग्रंथों की रचना की जो दिल्ली सल्तन्त–काल के इतिहास के अध्ययन के अमूल्य स्त्रोत हैं। मुगलकाल ऐतिहासिक ग्रंथों में बाबर कृत 'तुजके बाबरी', गुलबदन बेगम का 'हुमायूँनामा', अबुल फजल का 'अकबरनामा' व 'आइन–ए–अकबरी', निजामुद्दीन अहमद कृत 'तबकाते अकबरी', बदायूँनी का 'मुन्तखब–उत–तवारीख', जहाँगीर की आत्मकथा 'तुजके जहाँगीरी' और अब्दुल हमीर लाहौरी का 'पादशाहनामा' अत्यधिक प्रसिद्ध हैं।

मुस्लिम प्रभाव की व्यापकता को स्पष्ट करते हुए यह कहा जा सकता है कि भारतीय समाज एवं प्रशासन का कोई भी अंग इससे अछूता नहीं रहा। तत्कालीन युद्ध–विद्या के क्षेत्र में इस्लाम का प्रभाव और भी क्रांतिकारी था। डॉ. श्रीवास्तव ने लिखा है : ''मुसलमानों के संपर्क में का एक महत्वपूर्ण प्रभाव भारतीय युद्ध–प्रणाली पर पड़ा। मुगल युद्ध प्रणाली ने 16वीं सदी की भारतीय राजनीतिक स्थिति में क्रांति उत्पन्न कर दी।'' मुसलमानों द्वारा आग्नेयास्त्रों (तोपों) के प्रयोग ने एक नवीन युद्ध–प्रणाली को जन्म दिया जिसके फलस्वरूप हिन्दू युद्ध–व्यवस्था में भी महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए।

टाइटस का यह कथन उपर्युक्त वर्णन के पश्चात् कुछ पक्षपातपयुक्त प्रतीत होने लगता है कि ''सब कुछ कहने के पश्चात् इसमें तनिक भी संदेह नहीं रह जाता है कि अपने ऊपर इस्लाम के प्रभाव की अपेक्षा हिन्दू के इस्लाम पर कहीं अधिक प्रभाव डाला था।'' वस्तुतः धर्म, साहित्य, कला, संगीत सभी क्षेत्रों में दोनों संस्कृतियों के प्रभाव एक–दूसरे पर व्यापक रूप से हुए।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. डॉ0 के0 एल0 खुराना : मध्यकालीन भारतीय संस्कृति।
2. इरफान हबीब : मध्यकालीन भारत।
3. अकबरनामा : अबुल फजल।
4. जाफर रज़ा : मध्यकालीन भारत (इस्लामी राज्य बनाम मुस्लिम राज्य)।
5. अनफास–फी–तारीख : सैय्यद सिब्त–उल–हसन फाजिल हंसवी, 1941।
6. प्रो0 राधेश्याम : मध्यकालीन प्रशासन समाज संस्कृति।
7. अनवार–उल–कुर्आन : जीशान हैदरीशान हैदर अलजवादी : लखनऊ, 1999।
8. हरीशचंद्र वर्मा : मध्यकालीन भारत।